[This question paper contains 4 printed pages]

Your Roll No. : ....

Sl. No. of Q. Paper : **2075** **I**

Unique Paper Code : 2052101101

Name of the Paper : Aadikal evam Nirgunbhakti Kavya **हिंदी कविता : आदिकाल एवं निर्गुण-भक्ति काव्य**

Name of the Course : **B.A.(Hons.) Hindi**

Semester : I

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 90***

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

(i) इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(ii) **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए । 9×3=27

(क) भयौ एक फुरमान। बान जोगिनिपुर संध्यौ।।
सुइ सबद अरु बान। अग्र अबिचल कर बंध्यौ।।
बयौ बियौ फुरमान। तानि रष्यौ श्रवनंतरि।।
तियौ भयौ अनभयौ। हरयौ पीतसाहि धरंतरि।।

P.T.O.

लै दसन रसन तालु असघन। सीस फट्टि दह दिसि गबन।।
सुरतान परयौ षां पुक्करै। भयौ चंद राजन मरन।।

अथवा

बदन चाँद तोर नयन चकोर मोर
रूप अमिय-रस पीवे।
अधर मधुर फुल पिया मधुकर तुल
बिनु मधु कत खन जीवे।।
मानिन मन तोर गढ़ल पसाने।
कके न रमसे हसि किछु न उतरि देसि
सुखे जाओ निसि अवसाने।।

(ख) सतगुर साँचा सूरिवाँ, सबद जू बाह्या एक।
लागत ही में मिलि गया, पढ़या कलेजै छेक।।
सतगुर मारया बाण भरि, धरि करि सूधी मूठि।
अंगि उघाड़े लागिया, गई दवा सूँ फूंटि।।

अथवा

बिरहा बिरहा जिनि कहौ, बिरहा है सुलितान।
जिह घटि बिरह न संचरै, सो घट सदा मसान।।
अंषड़ियाँ झाई पड़ी, पंथ निहारि निहारि।
जीभड़ियाँ छाला पड़या, राम पुकारि पुकारि।।

(ग) खेलत मानसरोवर गई। जाइ पाल पर ठाढ़ी भई।।
देखि सरोवर हंसे कुलेली। पद्मावतीसौं कहहिं सहेली।।
ए रानी! मन देखु बिचारी। एहि नैहर रहना दिन चारि।।

जो लगि अहै पिता कर राजू। खेलि लेहु जो खेलहु
आजू।।
पुनि सासुर हम गवनब काली। कित हम, कित यह
सरवर पाली।।
कित आवन पुनि अपने हाथा। कित मिलि कै खेलब
एक साथा।।
सासु ननद बोलिन्ह जिउ लेही। दारून ससुर न निसरै
देहीं।।
पिउ पियार सिर ऊपर, पुनि सो करै दहुँ काह।
दहुँ सुख राखै की दुख, देहुँ कस जनम निबाह।।

अथवा

धरी तीर सब कंचुकि सारी, सरवर महँ पैठीं सब
बारी।
पाइ नीर जानौं सब बेली। हुलसहिं करहिं काम कै
केली।।
करिल केस विसहर बिस-भरे। लहरैं लेहिं कवँल मुख
धरे।।
नवल बसंत सँवारी करी। होइ प्रकट जानहु रस भरी।।
उठी कोप जस दारिवँ दाखा। भइ उनँत प्रेम कै
साखा।।
सरिवर नहिं समाइ संसारा। चाँद नहाइ पैठ लेइ
तारा।।
धनि सो नीर ससि तरई उई। अब कित दीठ कमल
औ कूई।।
चकई बिछुरि पुकारै, कहाँ मिलौं, हो नाँह।
एक चाँद निसि सरग महँ, दिन दूसर जल माँह।।

2. बानबेध समय का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए। 14

अथवा

बानबेध समय के काव्य-सौन्दर्य की समीक्षा कीजिए।

3. गीतिकाव्य परंपरा में विद्यापति का स्थान निर्धारित कीजिए। 14

अथवा

विद्यापति के काव्य के भाव-वैविध्य का परिचय दीजिए।

4. कबीर का काव्य 'आँखिन देखी पर आधारित है कागद लेखी पर नहीं', इस कथन के आलोक में कबीर के काव्य की समीक्षा कीजिए। 14

अथवा

कबीर की दार्शनिकता को विवेचित कीजिए।

5. सूफी काव्य परंपरा में जायसी का स्थान निर्धारित कीजिए। 14

अथवा

मानसरोदक खंड की अलौकिकता पर प्रकाश डालिए।

6. किसी **एक** विषय पर टिप्पणी लिखिए। 7

(क) विद्यापति की शृंगार भावना।

(ख) जायसी का काव्य सौन्दर्य।

(ग) कबीर की भक्ति भावना।

***